22.04.2018

<u>गुलाबी सूंड़ी के पुनरोचन को रोकने के बैठक के लिए माननीय कृषि मंत्री जी का अभिभाषण</u>

माननीय श्री सी विद्यासागर राव जी, राज्यपाल, महाराष्ट्र राज्य, माननीय श्री देवेंद्र फड़नवीस जी , मुख्यमंत्री, महाराष्ट्र राज्य, श्री पांडुरंग पुंडलिक फुंडकर जी, कृषि मंत्री, महाराष्ट्र राज्य, श्री सदाशिव खोत जी , कृषि राज्यमंत्री, श्री चंद्रशेखर बावनकुले जी, अभिभावक मंत्री, नागपुर, राज्य एवं केंद्र सरकार के अधिकारी, किसान भाइयो , इस अवसर पर मौजूद प्रतिनिधि, मीडिया एवं उपस्थित भाइयो और बहनों। आज, गुलाबी सूंड़ी के पुनरोचन को रोकने के बैठक मे आपके बीच उपस्थित रहने के लिए बहुत प्रसन्न हूँ।

2. जैसा कि आप सभी जानते है, की भारत एक कृषि प्रधान देश है और कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था का सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्र है। भारत के सकल घरेलू उत्पाद (जी. डी..पी.) में भारतीय कृषि का 18 प्रतिशत हिस्सा है और साथ ही इससे 50 % देशवाशियो को रोजगार भी मिलता है।

3. कपास भारत की प्रमुख रेशे वाली तथा बहुउद्देश्यीय फसल है क्योंकि यह रेशे के अतरिक्त खली एवं खाद्य तेल का भी बड़ा स्रोत है। कपास की फसल की कम पैदावार के लिए कीट व रोग प्रमुख रूप से उत्तरदायी है। कपास की फसल को सबसे अधिक क्षति रस चूषने एवं टिंडे भेदने वाले कीटो से होती है। वर्ष 2002 में बी. टी. कपास के आगमन के बाद कपास की फसल में हानि कारक कीटों के परिदृश्य में बहुत बड़ा परिवर्तन देखने को मिला। कपास की फसल में टिंडे भेदक कीटों (लेपिडोप्टेरा कीटो) से अधिक नुकसान होता था किंतु बी. टी. कपास के आगमन के बाद इनके प्रकोप में कमी आई है। पिछले कुछ वर्षों से कई राज्य के क्षेत्रों में ये देखने को मिला है कि गुलाबी सूंड़ी (Pink bollworm) जो कि कपास का एक प्रमुख टिंडा भेदक कीट है और अब बी.टी. कपास पर भी आक्रमण कर रहा है।

4. वर्ष 2017 में महाराष्ट्र, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक और मध्य प्रदेश राज्य गुलाबी सूंड़ी से प्रभावित हुए और संक्रमण 8-92% तथा संबंधित उपज नुकसान 10-30% तक दर्ज किया गया। बॉलगार्ड-2 बी.टी. संकर के विरुद्ध भी यह कीट प्रितिरोध विकसित कर चुका है। बीज की निम्न गुणवत्ता, बी. टी. जीन के कम अभिव्यक्ति, लंबी अवधि संकर की खेती और किसानों द्वारा ज्यादा तथा अपंजीकृत कीटनाशको के छिड़काव के कारण गुलाबी सूंड़ी की जनसंख्या आर्थिक स्तर से बढ़ गयी, जिसके कारण कपास की फसल की उपज में भारी कमी आई है।

5. कपास की खेती में किसानों द्वारा सामना की जाने वाली समस्या के बारे में 17/12/2017 की बैठक में उठाए गए महत्वपूर्ण मुद्दों पर केन्द्रीय सरकार द्वारा की गयी कारवाही से मे यहाँ उपस्थित प्रतिभागियों को अवगत करना चाहूँगा

i. **एनडीआरएफ के तहत वित्तीय सहायता:** महाराष्ट्र राज्य ने रु 3373.31 करोड़ का ज्ञापन धान और कपास में कीट हमले और ओखी चक्रवात द्वारा की गयी क्षति के खिलाफ प्रस्तुत किया है । महाराष्ट्र राज्य के ज्ञापन पर कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय ने नुकसान का आकलन करने के लिए एक अन्तर्मन्त्रालयिक टीम गठित कर दी गयी है ।

ii. **हर्बिसाइड सहिष्णु कपास बीजों के खिलाफ कार्रवाई:** सचिव, कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय, ने 10 कपास उत्पादक राज्यों के मुख्य सचिवों को वर्णित सहिष्णु कपास बीज बेचने वाली कंपनियों के खिलाफ कार्रवाई करने के लिए पत्र लिखे हैं। जिसके जवाब में गुजरात, आंध्र प्रदेश और महाराष्ट्र राज्य, ने अनुपालन रिपोर्ट भेजी है।

iii. **नई बीटी संस्कृतियों और बीटी बीजों पर आईसीएआर द्वारा शोध:** आईसीएआर-सीआईसीआर ने बीटी बीज की 8 नयी किस्मों को विकसित किया है, जो कि जल्दी परिपक्व हो जाती है। इन बीजों का उत्पादन प्रक्रियाधीन है और उनको बढ़ावा देने के लिए प्रयास किए जा रहे है। इसके अतिरिक्त, आईसीएआर नई बीटी संस्कृतियों की पहचान कर रहे है जो गुलाबी सूंड़ी से बच सकते हैं।

iv. **गुलाबी सूंड़ी प्रबंधन के लिए जागरूकता / विस्तार / प्रशिक्षण कार्यक्रम:** केन्द्रीय एकीकृत नाशीजीव प्रबंधन केंद्र (सीआईपीएमसी) नागपुर एवं पुणे और कपास अनुसंधान केंद्रीय संस्थान (सीआईसीआर) द्वारा गुलाबी सूंड़ी के प्रबंध के लिए जागरूकता / विस्तार / प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये गए, इसके अलावा, कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय ने किसान प्रशिक्षण कार्यक्रमों के आयोजन के लिए एचआईएल जैसे संगठन को वित्त प्रदान किया है

6. इसके अतिरिक्त कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय ने गुलाबी सूंड़ी के पुनरोचन को रोकने के अनेक महत्वपूर्ण कदम उठाए है, जैसे की:

i. केन्द्रीय एकीकृत नाशीजीव प्रबंधन केंद्र जो कि भारत सरकार, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के अधीन है इस समस्या के समाधान हेतु निरंतर कार्य कर रहे हैं। इन केन्द्रों द्वारा निरंतर नाशीजीव सर्वेक्षण एवम निगरानी कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं जिस से की बी. टी. कपास में गुलाबी सूंड़ी के प्रकोप का वास्तविक परिदृश्य सामने आ सके। इन सर्वेक्षणों के आधार पर, प्लांट प्रोटेक्शन क्वारंटाइन और स्टोरेज (डीपीपीक्यू एंड एस) निदेशालय, ने राज्यों के साथ सलाहएं साझा की गई हैं।

ii. किसान खेत पाठशाला के माध्यम से किसानों को एकीकृत नाशीजीव प्रबंधन के बारे में प्रशिक्षित किया जा रहा हैं ताकि इस कीट कि प्रतिरोधिकता को खत्म किया जा सके और कीटनाशको के अधिक इस्तेमाल पर भी अंकुश लगाया जा सके । निरंतर समय पर इन केंद्रों द्वारा जैविक नियंत्रण कार्यक्रम भी चलाये जा रहे हैं जिसके माध्यम से किसानों को नाशीजीवो के नियंत्रण हेतु जैविक नियंत्रण कारको के उपयोग हेतु प्रशिक्षित किया जा रहा है।

iii. भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) - कपास अनुसंधान केंद्रीय संस्थान (सीआईसीआर) द्वारा तैयार की गई प्रबंधन रणनीतियों को सभी राज्यों के कृषि विभाग, एसएयू और केवीके को अख़बारों, बुलेटिनों, प्रशिक्षण, पुस्तिकाओं और किसान मेलों के माध्यम से व्यापक प्रसार के लिए भेजा गया है।

iv. किसानों और राज्य सरकार को गुलाबी सूंड़ी संक्रमण पर संवेदनशील बनाने के लिए आईसीएआर-सीआईसीआर ने 18 अगस्त 2017 को एक प्रेस कॉन्फ्रेंस का आयोजन किया गया

था। किसानों को गुलाबी सूंड़ी संक्रमण और प्रबंधन पर जागरूक करने के लिए आईसीएआर-सीआईसीआर ने वर्धा, यवतमाल एवं अकोला जिलों में जागरूकता शिविरों का आयोजन किया।

v. सीआईसीआर द्वारा, सन 2010 से बीटी कॉटन के खिलाफ गुलाबी सूंड़ी प्रतिरोध की नियमित निगरानी की जा रही है । आवाज मेल के माध्यम से साप्ताहिक सलाह (ई-क़पास) पूरे भारत में 3.75 लाख किसानों को जारी किए गए, वर्ष 2012-17 के दौरान पंजीकृत 2.12 करोड़ किसानों को आवाज संदेश भेज गए हैं।

vi. सीआईसीआर ने बीटी किस्मों के 8 छोटी अवधि के बीज जारी किए है जिनका उत्पादन सीआईसीआर, एनएससी और पीएयू में चल रहा है।

7. यहाँ उपस्थित सभी प्रतिभागियों को मे यह अवगत करना चाहुगा की वर्ष 2017 में गुजरात राज्य गुलाबी सूंड़ी को कम करने में सफल रहा, इस सफलता का श्रय गुजरात राज्य द्वारा उठाए गए ठोस कदमों को देना चाहिए, जैसे की:

- राज्य ने सीआईसीआर की सलाह सक्रिय रूप से प्रयुक्त किया
- समय पर बुवाई और समापन , बोवाई को 15 जून से 5 जुलाई तक सीमित रखा गया
- गुणवत्ता वाले बीज की उपलब्धता सुनिश्चित की गयी
- इलेक्ट्रॉनिक और प्रचलित मीडिया के माध्यम से किसानों के लिए जन जागरूकता अभियान आयोजित किये गए
- किसानों के लिए रात में प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये गए
- छोटी अवधि संकर, फेरोमोने ट्रैप्स और लाइट ट्रैप्स का उपयोग किया

8. विषय विशेषज्ञ के सुझाव के आधार पर कपास में गुलाबी सूंड़ी के प्रबंधन के लिए भविष्य की रणनीति इस प्रकार होना चाहिए:

- बीकपास का बीज अधिकृत विक्रेता से खरीदे ताकि अच्छी गुणवत्ता वाले बीज को सही .टी . तरीके से वर्गीकृत किया जा सके।
- अल्प अवधि एकल चुगने वाली किस्म 150)दिनकी बीजाई करनी चाहिए जो कि अधिक (उपज देती हो, बीजाई जून के महीने में करनी चाहिए जिस से की गुलाबी सूंड़ी के प्रकोप से बचा जा सके।
- रिफ्यूजिया देशी कपासकपास अथवा देरी से बोई जाने व .टी .गैर बी /ाली भिंडी को खेत के चारो ओर रीफुजिया के रूप में उगाना चाहिए।
- फसल चक्र का दृढ़ता से पालन करना चाहिए जिस से की गुलाबी सूंड़ी के जीवन चक्र बाधित किया जा सके। खेत मे मित्र कीट का संरक्षण करना चाहिए।
- पंजीकृत कीटनाशकों का ही उपयोग किया जाए।
- किसानो के लिए व्यापक स्तर पर जागरूकता अभियान चलाए जाने चाहिए ताकि इस कीट की गंभीरता और उचित प्रबंधन को समझा जा सके।
- कृषि विस्तार अधिकारियों के लिए मानव संसाधन कार्यक्रम चलाए जाये।

- केवल वैध लाइसेंस विक्रेता ही पंजीकृत कीटनाशकोंकीटनाशकों की बिक्री करे।-जैव/
- कीटनाशक कंपनियां, कॉर्पोरेट सामाजिक दायित्व के तहत, किसानों को कीटनाशकों के सुरक्षित और समझदार उपयोग पर प्रशिक्षण प्रदान करे।
- किसानो के लिए एकीकृत कीट प्रबंधन पर जागरूकता अभियान ।
- आईसीएआरनयी किस्मों को विकसित किया है 8 सीआईसीआर ने बीटी बीज की-, जो कि जल्दी परिपक्व हो जाती है। इन बीजों का उत्पादन प्रक्रियाधीन है और उनको बढ़ावा देने के लिए प्रयास किए जा रहे है। इसके अतिरिक्त, आईसीएआर नई बीटी संस्कृतियों की पहचान कर रहे है जो गुलाबी सूंड़ी से बच सकते हैं।
- 'गुजरात मॉडल' का कार्यान्वयन गुलाबी सूंड़ी संक्रमण कम करने के लिए करना चाहिए

यह सुझाव गुलाबी सूंड़ी के पुनरोचन को रोकने में मदद करेगी तथा कृषि क्षेत्र मे आदानों की लागत को भी कम करेगी जिससे किसानों की आय मे वृद्धि होगी

****